नजर आ छत

✍ डॉ० पी० एस० सिन्हा

''गरीब आदमी ओकरा के कहल जाला जेकरा आपन घर ना होखे; घर के लोगन के जामा, कुर्ता, धोती-पजामा, लुगा-चुनरी ना होखे; भर पेट खाना मिलत ना होखे । उ अपना लड़िकन के सरकारी स्कूलन में पढ़ावत होखे, लड़िकन के किताब, कॉपी, कलम, काठ पेंसिल.... समय पर ना दे सकत होखे: लड़िकन के पढ़ावे खातीर पैसा ना होखे......।

अमीर आदमी ओकरा के कहल जाला जेकरा आपन घर होखे, हर दिवाली से पहिले घर में चुना फेरात होखे; ओकरा घरे सभे के नया-नया कपड़ा पहिरे के होखे; नया साइकिल होखे; लड़िकन के पढ़ावे खातिर रु. पैसा होखे.. .. ई बात एगो गरीब घर के लड़िका लिखलस जब मास्टर साहिब स्कूल के लड़िकन के गरीब आ अमीर आदमी पर लेख लिखे के कहनी ।

उहवें एगो धनिक घर के लड़िका लिखलस-''गरीब आदमी ऊ ह जेकरा आपन एकेऽगो पुरान घर बाप-दादा के बनावल होखे जवना में चूना ना फेरात होखे; एकेऽगो पुरान कार होखे; दु जोड़ी जूता-चप्पल से जादे ओकरा घरे केहु आदमी के ना होखे; ओकरा घरे लड़िका लोग स्कूल-वस से स्कूल जात होखे.....।

अमीर आदमी ऊ ह जेकर सुन्दर बंगला देश के बड़का शहरन में होखे; नास्ता-खाना में चार गो तरकारी, आचार, चटनी, पापड़, घी के साथे हरियर मरीचा, पियाज से कम ना राखात होखे; उहाँ के घर के लड़िकन के स्कूल जाये-आवे खातीर उहाँके कार से ड्राइवर ले आवत, ले जात होखे; घरे सभे खातीर अलगे-अलगे कार ड्राइवर के साथे तइयार रहत होखे; उहाँ के दुआरा दरवान बंदूक लेके पहरा देत होखे; दूर जाये आवे खातीर उ लोग हवाई जहाज चाहे रेलगाड़ी के ए.सी. में जातरा करत होखे; घर में नोकर-दायी के कमी ना होखे;........।

दोसरा दिन जब मास्टर साहिब अपना घरे के सभ से कहनीं कि हम महाभारत के सी.डी. ले आइल बानी, आज हमनी देखब । .... महाभारत खतम भइला पर मास्टर साहिब सबसे पहिले अपना मेहरारू से अकेले में जाके पूछलीं-''महाभारत त बड़ा चाव से देखलू ह, रउआ का समझनीं ह ? तनी हमरो के बताईं ? उहाँ के मलिकाइन तपाक से कहलीं-''हम त कबो-कबो देवर जी से हँस-बोल लेनीं त रउआ आग-बबूला हो जाइलें । द्रौपदी त पाँच लोगन के साथे रहली बाकिर पाण्डव लोग कबो ना लड़ले-झगड़लें ।''

जब उहाँ के अपना लड़िकन से पुछनीं-''का सबक मिलल ह तहरा लोगन के ?'' त उहाँ के बड़का बेटा कहलस-''पाण्डव लोग के बाप-महतारी निमन रहे । पाण्डव लोग जुआ खेले में आपन सबकुछ-हार गइलें इहाँले कि आपन मेहरारूओं के दाव पर लगा के हार गइलें ।

हमनी त कबो-कबो जुआ खेलेनी जा आ जीत के हीं अब ले आइल बानी.....। बाकिर एगो रउआ बानी जो एकरा पर खिसिआइले....।''

मास्टर साहिब सोंचते रह गइले...आ उ लोग उठ के उहाँ से चल गइल । उहाँ के सोचते रहलीं कि महाभारत देखावला से हमरा घरे के लड़ाई-झगड़ा खतम हो जाई काहे कि हमरा घरे के लोग ई जान जाई कि लड़ाई-झगड़ा आ बेमानी के अन्त खराबे होला बाकिर भइल उल्टा....?

एक दिन मास्टर साहिब एगो मंदिर गइनी जवन एगो पहाड़ी पर रहे आ ओ पहाड़ी पर जंगल गाछ-बिरीछ रहे । उहाँ के मन ओ मंदिर में लाग गइल रहे एही से उहाँ के देखनी जे लोग पूजा के छीपा में पूजा के सामान सजा के रखले रहे, भक्ति-भाव से मंदिर में सकल मंगल कामना, पूजा-पाठ क के जाये के बेरा आपस में बतिआवत रहे-''केतना सुन्दर मंदिर बा ? ई त हमनी सुनते रहीं, इहाँ फेरू आवे के चाहीं....। देखते-देखते उ लोग चल गइल आ दोसर जोरा. ..मंदिर के पीछा के झाड़ी से आइल । मास्टर साहिब मंदिर के बहरी के पत्थर के एगो लमहर टुक्की पर बइठ के सभे के देखत आ ओ लोगन के बात सुनत आ मनन-चिन्तन करत रहीं । ई लोग बतिआवत रहे-''....(मास्टर साहिब के ओरी इशारा क के) ई बुढ़वा अभी ले बइठले बा ? लागता कि हमनिये अइसन एकरो मन मंदिर के भगवान के मुकुट पर बा । आखिर कब ले इन्तजारी कइल जाई । हमनी अगर हटब त ई मुकुट ले जाई आ हमनी हाथ मलते रह जाइब ।''

एक दिन मास्टर साहिब रेलगाड़ी से अकेले भोपाल से झाँसी जात रहनी । खिड़की के लगे एगो कोना में बइठल

रहीं । भोपाल स्टेशन पर ही एगो मरद-मेहरारू के जोरा आ के बइठ गइल आ बतिआवे लागल-मरदा कहलस-"जानेलू हमनी के तिलक में दान दहेज काहे मिलेला ?

मेहरूआ कहलस-"बिआह में खर्चा खाती आ घर बसावे में जे कमी-बेशी होई उ पूरा करे के खातीर, जवना से लड़की-लड़िका के जिनगी के शुरूआत निमन से हो जाई....।

मरदा कहलस-"ना !...ना!! तूँ त जानते बारू की हम मवेशी अस्तपाल में काम करीले । एगो गाय-भईंस के ग़रम भइला पर एक टिप के एक सौ रु. अब लागेला । हमरा त बुझाता कि जिनगी भर के टिप के हिसाब जोड़ के एके हाली एडभांस तिलके के रूप में दे दिआला ।"

विदिशा स्टेशन पर उ लोग उतर गइल आ मास्टर साहिब के एगो निमन झटका दे गइल । मास्टर साहिब सोंचते रह गइनीं....। मने मन चाहत रहीं कि कुछ समझावल जाव बाकिर डरे कुछ-ना बोलनीं कि आज के नवही पर कवन भरोसा.........? कहीं झगड़ा करे लगीहें स.....त.....?

रेलगाड़ी अपना रफ्तार से चलत रहे आ मास्टर साहिब के दिमाग अपना रफ्तार से तबले अगिला रेलवे स्टेशन बीणा आ गइल । एगो मरद-मेहरारू के जोरा फेरू आ के ई दूनों मास्टर साहिब के सामने वाला सीट पर बइठ गइल लोग । मेहररूआ छने-छने अपना मरदा के डाँटत रहे, दाँत पिसत रहे । मास्टर साहिब के आँख खिड़की के बाहर आ कान ओकनीये पर रहे । का बतिआवत बारें सन......? का इहो ओकनीये अइसन.....? मन में ना कइसन-कइसन खानी-बेखानी के बात-विचार आवत रहे ? मरदा पर मउगी भारी परत रहे-कबो डाँटे, कबो आँख देखावे, कबो दाँत पीसे, कबो हाथ चमकावे त कबो मुरी हिलावे....। तबले रेलगाड़ी छोट-छोट 2-3 गो स्टेशन पार क गइल । मउगी कहलस-"ढ़ेर हो गइल...अब तूँ सोच ल हमरा साथे रहबकि अपना माई-बाप के साथे .....। अगर माई-बाप के साथे रहे के होखे त हमरा हिसाब क द । 3 मरदा पुछलस-"का ?" त उ कहलस एक रात के पाँच सौ रु. के हिसाब से आज एक साल हो गइल हमनी के बिआइ भइला, मानी 500 रु. × 365 दिन बराबर कुल 01,82,500 रु. । ठीक से सोच लिह ? तबले ललितपुर रेलवे स्टेशन आ गइल, आ रेल गाड़ी ठहर गइल; मउगी ई कहत उतर गइल कि हम साँझ ले आवत बानी सोंच लिह....। रेलगाड़ी फेरू चले लागल आ उनकर दिमाग अपना रफ्तार से...।

मास्टर साहिब से रहल ना गइल ।.... उहाँ के उहाँ से पुछलीं....."ए बाबू इ के रहल ह?" उ कहलें-"हमार मेहरारू" कहके रोये लगलें ।" कहवाँ ससुरार ह तहार ? "मास्टर साहिब के सवाल के जबाब उ देहलें-"आगरा में ताजमहल के लगे । इनकर मतारी-बाप ताजमहल में आइल बाहरी लोगन के गाइड के काम आ मनोरंजन करेला । हमार घर एगो गाँव में बा, हमार माई-बापजी एगो खानदानी शरीफ किसान ह लोग । गलती से हमार बिआह एकरा से हो गइल । जवना के फल हमनी भोगतानी.....।

बबिना रेलवे स्टेशन पर उ लड़िकवा रोअते उतर गइल-मास्टर साहिब के पाव लाग के ।

एगो जोड़ा फेरू आ के मास्टर साहिब के सामने खड़ा होके एने-ओने देखे लगलें । मास्टर साहिब के दिमाग चकराये लागल-कहीं इहो ओकनिये अइसन त ना....? अतने में मरदा मास्टर साहिब के प्रणाम क के पूछलस-"का ई सीट खाली बा ?" मास्टर साहिब माथा हिला देनी (हाँ) के इसारा कइनी । ई लोग एगो खानदानी अइसन बइठ गइल लोग । रेल गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़े लागल । उ लोग मास्टर साहिब से बतिआवे लागल-अपने कहँवा जाइब ? "अगिला स्टेशन झाँसी"-मास्टर साहिब जबाब देहनीं । "हमनियों उँहवे जाइब जा"-उ लोग कहलस । रेलगाड़ी आपन रफ्तार पकड़लस आ ए लोगन के बतकही आपन रफ्तार ।

एगो अन्जान आदमी से दोसर मरद-औरत के सभ्यता-संस्कृति भरल बात-चित जइसे केहूँ एगो अपना आदमी जमाना बाद मिलल होखे ?...... रेलगाड़ी झाँसी जं. आ के रूकल बाकिर ए लोगन के बतकहीं ना रूकल । मास्टर साहिब के सामान उ मरदा ले लेहलस आ सभे रेलगाड़ी से उतर के प्लेटफार्म पर आ गइल । उ लोग मास्टर साहिब के प्रणाम क के चल गइल स्टेशन के बहरी ।

मास्टर साहिब प्लेटफार्म पर के ए गो बेंच पर जा के बइठ गइनीं । सोचे लगनी-भगवान ई कइसन दुनिया बनवनी कि सभे के कुछुऽओ देख के आपन एगो अलगे नजर (View) आ सोंचे के आपन एगो अलगे छत (celling) होला जवना से अधिक ना उ सोच सकेला ना देख सकेला । शायद इह दुनों एगो आदमी के हर दूसरका आदमी से अलग करेला जवना के व्यक्तिकरण (Individualisation) कहल जाला । हे राम....।

-एफ-34, शासकीय आवास, कोटरा,
सुलतानाबाद, भोपाल (म० प्र०)-462003